ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VII अंक V

अगस्त 2015

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना पर बैंकरों की समीक्षा बैठक
- इस माह के कृषि उद्यमी: एर. एडीसन थियोडोर विलियम्स
- इस माह का संस्थान: इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्री-बिज़नस प्रोफेशनल्स
- झारखंड में कृषि महोत्सव रथ यात्रा, 2015

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र योजना (एसी एवं एबीसी) पर बैंकरों की समीक्षा बैठक

श्री. राघवेंद्र सिंह, अपर सचिव, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में 26 अगस्त, 2015 को कृषि विस्तार सदन, पूसा, नई दिल्ली में ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-बिज़नस केंद्र (एसी एंड एबीसी) योजना पर बैंकरों की 11 वीं समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। श्री. आर. के. त्रिपाठी, निदेशक (विस्तारण प्रबंध) ने अपने स्वागत भाषण में इस समीक्षा बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

श्री. नरेंद्र भूषण, संयुक्त सचिव (आईटी) ने अपने परिचयात्मक टिप्पणी में वित्तीय समावेशन और बैंकिंग सेवाओं का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री के पहलों जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई) के विषय को छुआ। उन्होंने "एक बैंक शाखा, एक उद्यमी" के निधिकरण की अवधारणा के विस्तारण के लिए दृढ़ विषय बनाया। उन्होंने राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना-पीएमकेवीवाई) के विषय में भी

कहा जिसे देश में कौशल विकास गतिविधियों के क्रियान्वयन के लिए केंद्र और राज्य में मजबूत संस्थागत ढ़ाचा प्रदान करने के लिए संरचित किया गया है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि कृषिउद्यमियों को पीएमकेवीवाई के उद्देश्य को हासिल करने के लिए विकसित और सशक्त बनाना होगा। श्रीमती. उषा रानी, महाप्रबंधक, मैनेज ने हस्तक्षेप करेत हुए नाबार्ड में लंबित ऋण के मामलों पर निगरानी रखने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। आंकड़ों के हवाले से महाप्रबंधक ने कहा कि प्रशिक्षित अभ्यर्थियों में से केवल 42.80% अभ्यर्थी ही सफलतापूर्वक अपना ऐग्रीवैंचर स्थापित कर सके है जिसमे से 4.08% और 2.80% प्रशिक्षित अभ्यर्थी ही क्रमशः बैंक से ऋण और सब्सिडी का लाभ उठा सके हैं, इस बात पर पुनः ज़ोर दिया गया कि बैंक **एक बैंक शाखा, एक ऐग्री-क्लीनिक** दृष्टिकोण अपनाए जहां विभिन्न बैंकों के 1.09 लाख शाखा में से हर शाखा अपने सेवा क्षेत्र में प्रति वर्ष कम-से-कम एक कृषि उद्यमी का वित्तीयन करेगी। डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक (सीएडी), मैनेज ने एसी और एबीसी योजना के अंतर्गत की गयी तरक्की को रेखांकित किया। उन्होंने कृषि उद्यमियों द्वारा प्रस्तुत किए गए परियोजीना प्रस्तावों के बारे में भी कहा जो विभिन्न बैंकों में लंबित है। बैठक धन्यवाद भाषण के साथ खत्म हुई।

कृषि उद्यमी कोको पीट से हाइ-टेक कृषि की नींव रखते हुए

एर. एडीसन थियोडोर विलियम्स (39) पेशे से एक एक इंजीनियर और साथ ही बागबानी में डिप्लोमा किए हुये अन्नानगर ग्राम, कोयम्बटूर जिला, तमिलनाडु के निवास है। उनकी शिक्षा के पश्चात, वे अपने गाँव लौट गए और अपने आप को नारियल की जटा के व्यापार की गतिविधियों में शामिल कर दिया। उन्होंने यह पाया कि, “बीजू जब तक यह आरोपण के लिए तैयार नहीं हो जाते उन्हें उगाने के लिए कोको-पीट एक अच्छा माध्यम है। इसकी सैलूलोज़ संरचना बीज के जड़ों को जमने और उनको पानी की सही मात्रा सोखने में मदद करती है। मुख्यतः यह माध्यम किटाणु और फफुंद से मुक्त है”। कोको-पीट पौधों की खेती के लिए मिट्टी-मुक्त सबस्ट्रेट है और उनका यह मानना है कि कोइर आधारित उत्पाद देश में बागबानी क्षेत्र का भविष्य बदल सकते है। उन्होंने तकनीकों को अच्छे से समझने के लिए बागबानी नर्सरी प्रबंध में डिप्लोमा किया। उन्होंने जल कृषि और कम लागत वाली मिट्टी-रहित खेती की तकनीकों में समृद्ध अनुभव प्राप्त किया। यह 2014 में था जब डॉ. मरियप्पन, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग के प्रमुख, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के साथ भेंट के समय उन्हें बेरोजगार कृषि-व्यवसायियों के लिए ऐग्री-क्लीनिक और ऐग्री-व्यवसाय (एसी एवं एबीसी) योजना के बारे में पता चला। उन्होंने आगे यह बताया कि उन्होंने बायोफार्म नोडल प्रशिक्षण संस्थान में दो-माह के मुफ्त आवासी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए नामांकन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम खत्म करने के पश्चात एर.एडीसन ने अपने फ़र्म, जिसे उन्होंने “विलियम एंटरप्राइज़” का नाम दिया में पूर्व कार्य को ही जारी रखा। हालांकि, यह वैंचर को कॉयर के उत्पादों के परामर्श और व्यापार के फ़र्म के रूप में आरंभ किया गया था, उन्होंने कम समय में ही इसका परिचालन फैला दिया। इस बीच, एर.एडीसन ने एसी और एबीसी प्रमाणपत्र के आधार पर रु.20 लाख के लागत का परियोजना प्रस्ताव पेश किया। कैनरा बैंक ने रु.20 लाख के प्रस्ताव को अनुमोदित किया (मुनाफा-3.00 लाख, ऋण-17 लाख, सब्सिडी घटक-7.20 लाख) और सैद्धांतिक रूप से उनका ऋण मंजूर किया। एर. एडीसन ने अब पूरे साधनों से युक्त कॉयर उत्पाद निर्माण संयंत्र खड़ा किया है। आज, “विलियम्स एंटरप्राइज़” कॉयर बोर्ड के साथ बागबानी कॉयर उत्पादों के निर्यात और रसायन और मित्र देशों की उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद (सीएपीईएक्सआईएल) के साथ नारियल के खोल का कोयला, इक्स्पैन्डड पर्लाइट, अपशल्कित वर्मीक्यूलाइट के निर्यात में व्यापारी निर्यातक के रूप में पंजीकृत निर्माता है। यह फ़र्म कोको-पीट में विविध उत्पाद भिन्नता प्रदान करने की क्षमता रखने के कारण कोको-पीट के विविध उत्पादों का निर्माण करता है। कॉयर हस्क चिप, कोको-पीट, रबर युक्त कॉयर उत्पाद, नारियल खोल उत्पाद, नारियल खोल कोयला, कट फाइबर, कॉयर आधारित जैव खाद आदि विभिन्न प्रकार के उत्पाद उपलब्ध है।

एर.एडीसन, कृषि उद्यमी

श्रीमती मीनाल्चि, केसलड़ा रोड, अरवेणु पीओ, कोटागिरी-643201, मोबाइल सं. 097868 67176 का कहना है कि विलियम्स एंटरप्राइज़ से खरीदा हुआ कोको-पीट अच्छी गुणवत्ता वाला है और लिलियम का उत्पादन मिट्टी में उगाने के मुक़ाबले इसमे बहुत अच्छा हुआ है। मैं 'विलियम्स एंटरप्राइज़' की नियमित ग्राहक हूँ और वें हमें अच्छी सेवा प्रदान करते है।“

नारियल के हस्क चिप के निर्माण के अलावा, यह फ़र्म भारत के नारियल हस्क चिप निर्माताओं के समूह को संयुक्त करने में भी जुटा हुआ है और नारियल हस्क चिप के निर्यात के ऑर्डर को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कार्य कर रहा है ताकि खरीदार को गुणवत्ता, मात्रा और मूल्य का आश्वासन प्राप्त हो सके जबकि निर्माताओं को उनके कोको-पीट और नारियल हस्क चिप के उत्पादों का सही दाम प्राप्त हो सके। बागबानी में डिप्लोमा के साथ एक इंजीनियर होने के कारण उन्होंने नारियल के भूसे को काटने की एक मशीन भी तैयार की है जिसका प्रयोग कॉयर मल्च और नारियल के हस्क चिप्स ने निर्माण में किया जाता है। यह फ़र्म जलीय कोको-पीट कोंपक्टिंग मशीनरी और अन्य कॉयर उत्पाद निर्माण मशीनरी से भी संबंध रखता है। एर.एडीसन ने बताया कि महाराष्ट्र, पंजाब और हरयाणा राज्यों जहां जलीय कृषि की जागरुता बढ़ रही है वहाँ से कई पूछ-ताछ होती है। आगे उनका कहना है कि, तमिलनाडु में कई समर्थ उद्यान विशेषज्ञ हमारी वेबसाइट http://www.cocopeat.co.in देखने के बाद हमसे संपर्क करते है और हमारे फ़र्म का भी दौरा करते हैं। मैं उन्हें, उच्च प्रारम्भिक निवेश के बावजूद बागबानी फसलों को कोको-पीट में उगाने से होने वाले लाभ के विषय में समझता हूँ। अंतिम उपयोग के लिए कोको-पीट का प्रसंस्करण, उसके के लिए आवश्यक सावधानी और अन्य संबन्धित जानकारी आगंतुकों को मुफ्त प्रदान की जाती है। अपनी आवश्यकता के लिए कोको-पीट का ऑर्डर देनेवालों को उसकी डेलीवेरी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के पश्चात ही की जाती है। एर.एडीसन ने कृषकों की सुविधा के लिए एक प्रदर्शन पोली हाउस का निर्माण किया है जहां विभिन्न फसल जलीय परिस्थिति में उगाये जा सकते हैं। उनका कहना कि तमिलनाडु, हरयाणा, महाराष्ट्र, पंजाब आदि राज्यों के लगभग 1000 कृषक उनके नियमित ग्राहक है। उनके फ़र्म का वार्षिक कारोबार रु.60 लाख है और बागबानी कॉयर निर्माण एकक ने 10 लोगों को रोजगार प्रदान किया है। एर.एडीसन का कहना है कि, “एक कृषिउद्यमी की तरह उभरने के लिए एसी एंड एबीसी एक उत्कृष्ट कार्यक्रम है” और कृषि एक उद्योग के रूप में उद्यमवृत्ति के लिए उच्च अवसर प्रदान करती है।

ई. एडीसन थियोडोर विलियम्स
35/20, पीपीएस कॉलोनी, अन्ना नगर, पीलामेडु, कोयम्बटूर – 641 004, मोबाइल: 09994317982, , http://www.cocopeat.co.in/

श्री. शाइबल चटर्जी

वरिष्ठ परियोजना प्रबन्धक

एनटीआई का नाम: इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्री-बिज़नस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी)

पता: इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्री-बिज़नस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी), 23, जमरुदपुर कम्यूनिटी सेंटर, कैलाश कॉलोनी एक्सटैन्शन, नई दिल्ली-110048

मोबाइल: +91-8860069915

ईमेल आईडी: isapmanage@isapindia.org

वेबसाइट: www.isapindia.org

प्रशिक्षण की संख्या: 146

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की संख्या: 4486

स्थापित वेंचरों की संख्या: 1609

सफलता का दर: 47.33%

स्थापित ऐग्री-वैंचर:

ऐग्री-क्लीनिक्स, ऐग्री-बिज़नस सेंटर, मधुमक्खी पालन, शहद प्रसंस्करण एकक, कुक्कड पालन, बकरी पालन, कस्टम हाइरिंग सेंटर, बीज प्रसंस्करण एकक, केंचुआ खाद, पशुचिकित्सालय, डेयरी एकक, दूध एकत्रण केंद्र, मत्स्यपालन, पशु आहार निर्माण एकक, आदि।

कृषि विस्तारण कार्यक्रम के लिए आईसीटी का प्रयोग – आईएसएपी के तरीके से

इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्रीबिज़नस प्रोफेशनल्स (आईएसएपी) उत्तरप्रदेश, हरयाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, और कर्नाटक के राज्यों के दो लाख से अधिक कृषक परिवारों के साथ कार्य करते हुये उसके विभिन्न कृषि विस्तारण कार्यक्रमों में आईसीटी का प्रभावपूर्ण ढंग से प्रयोग कर रहा है।

कृषकों और कृषक महिलाओं में डिजिटल सशक्तिकरण।

आईएसएपी के तहत आईसीटी की गतिविधियां

- कृषक हेल्पलाइन (केसीसी) के द्वारा कृषि-परामर्श
- कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन (सीआरएस)
- ई-कृषक सहयोगी एप्लेट (सूचना के प्रसार के लिए मोबाइलों/ टेबलेटों/पीसी पर फार्म एनिमेशन क्लिप्स, विडियो, ऑडियो फ़ाइल और टेक्स्ट)
- आवाज़ प्रसारण प्रणाली

कोटा (राजस्थान) और गुलबर्गा (कर्नाटक) में किसान कॉल सेंटर

आईएसएपी कोटा (राजस्थान) और गुलबर्गा (कर्नाटक) में दो किसान कॉल सेंटर चला रहा है। कृषक टोल फ्री नंबर पर कॉल कर सकते है और कृषि विशेषज्ञों से खेत-विशेष समस्याओं से परामर्श प्राप्त कर सकते हैं। केसीसी गुणवाता की जांच के लिए अत्याधुनिक जांच उपकरणों और एमआईएस में बैक-एंड सपोर्ट प्रणाली से युक्त है जो त्रुटियों को कम करता है।

कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन (सीआरएस) द्वारा परामर्श

सीआरएस, राजस्थान के सिरोंज, विदिशा, डिगोद, और कोटा में कार्य कर रहा हैं। 50 वॉट का ट्रांसमिटर 25 की.मी. के रेंज को कवर करते हुये सीधे वैज्ञानिकों और कृषि विशेषज्ञों द्वारा महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार करता है। फोन-करें कार्यक्रम में कृषक विशेषज्ञों को कॉल कर सकते है और अपने खेत-विशेष समस्याओं के लिए परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

ई-कृषक सहयोगी एप्लेट

यह एप्लेट दोनों ऑफलाइन और ऑनलाइन कार्य करता है। यह विस्तारण एजंटों के लिए प्रभावकारी निर्णय सहायक प्रणाली (डीएसएस) है। विस्तारण एजेंट परियोजना क्षेत्र में कृषकों से मिलने जाते समय ई-केएस एप्प युक्त टेबलेट साथ ले जाते हैं। ई-केएस के प्रयोग से वें कृषकों को उनके खेत में रोग और कीट प्रकोप पता करने में मदद करते है और उन्हें नियंत्रण उपाय बताते है। यदि, समस्या पता नहीं चलती है तो विस्तारण एजेंट तस्वीर खींच कर केसीसी विशेषज्ञ को भेज सकते हैं। केसीसी विशेषज्ञ वेब-इंटरफ़ेस द्वारा कृषक की तस्वीरों के साथ-साथ विवरणों को देख सकते है और वें कृषक को सही उपाय बता सकते हैं। कृषक ई-केएस के प्रयोग से प्रमाणित फसल तकनीकों पर लघु एनिमेशन विडियो देख सकते हैं।

आवाज़ प्रसारण सेवाएँ

कृषकों के समूह को लक्षित करने के लिए साप्ताहिक आधार पर पूर्व-अभिलिखित आवाज़ के संदेश प्रसारित किए जाते हैं। संदेश में फसल पर सुझाव, मौसम और बाज़ार के दरों पर उचित सूचना शामिल होती है।

झारखंड में कृषि महोत्सव रथ यात्रा - एक समीक्षा

27 मई 2015 को झारखंड के मुख्यमंत्री श्री. रघुबर दास, राज्य कृषि मंत्री श्री. रणधीर कुमार सिंह, झारखंड के विधानसभा अध्यक्ष श्री. दिनेश ओरोण और अन्य ने रांची, झारखंड के मोरहबाड़ी में "कृषि महोत्सव रथ यात्रा 2015" के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर कृषि रथ नामक 29 मोबाइल वैनों को हरी झंडी दिखाई गयी। इस मोबाइल वैन की अवधारणा की उत्पत्ति श्री.विजय भरत द्वारा अधिकृत मोबाइल कृषि स्कूल और सेवा (एमएएसएस) से देखी जा सकती है। श्री. विजय भरत को भी झारखंड के राज्य मंत्रालय द्वारा इस "कृषि महोत्सव रथयात्रा, 2015" के कार्यभार संभालने हेतु आमंत्रित किया गया था। एमएएसएस इन 29 वैनों (कृषि रथ) को बनाने में भी शामिल था। प्रत्येक वैन कृषि लघु-किट, खेती उपकरण, आईपीएम किट, आईएनएम किट और प्रॉजेक्टर एवं विडियो सीडी से लेस है। वैन(रथ) पर कृषि विकास के संदर्भ में स्थानीय भाषा में नारे और संदेश लिखे एवं प्रदर्शित किए गए थे। प्रत्येक जिले में एमएएसएस द्वारा विकसित कृषि पर विडियो फिल्म भी दर्शाई गयी थी। कृषक पोर्टल द्वारा प्रत्येक जिले में रथ यात्रा की सूचना प्रसारित की गयी थी। जिले के विस्तारण कार्यकर्ता रथ के स्वागत और कृषकों की बैठक आयोजित करने में शामिल थे। कृषकों को जैविक कृषि और मृदा परीक्षण के महत्व पर भी परामर्श दिया गया। यात्रा के दौरान, कृषकों को उच्च गुणवत्ता के बीज, उर्वरक, कृषि सामाग्री, आईपीएम किट, आईएनएम किट वितरित किए गए थे। कृषकों को विभिन्न सरकारी प्रायोजित योजनाओं और कार्यक्रमों से भी अवगत करवाया गया। वैन (रथ) ने 15 दिनों में राज्य के 24 जिलों को घेरा और प्रत्येक जिले में 1000 एकड़ खेतिहर भूमि के विकास का लक्ष्य था। श्री. विजय भारत, एमएएसएस संक्षेप में कहते है कि रथ यात्रा निर्विवाद रूप से एक बड़ी सफलता रही।

श्री रघुबर दास, चीफ मिन्स्टर. झारखण्ड द्वारा कृषि महोत्सव रथ यात्रा, 2015 का उद्घाटन हुआ

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली

अधिक प्रश्नों हेतु, कृपया indianagripreneur@manage.gov.in पर संपर्क करें।